ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072

July-December 2024- Vol. 13 No. 2

संत दरिया साहिब की भक्ति साधना एवं मानवतावादी दृष्टिकोण का अध्ययन वर्तमान परिदृश्य मं

डॉ. सुनील कुमार जलथुरिया

हिन्दी विभाग

अपेक्स स्कूल ऑफ मानविकी एवं कला

अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश–

राजस्थान संत–महात्माओं की भूमि रहा है। समय–समय पर ऐसे महान मनीषियों ने इस भूमि पर जन्म लिया है, जिन्होंने अपनी भक्ति के प्रताप से समाज को अपनी ओर आकर्षित करते हुए एक अनुपम मार्ग प्रशस्त किया है। ऐसी ही एक महान विभूति ने मारवाड़ क्षेत्र में जन्म लिया जिन्होंने न केवल राजस्थान को अपितु संपूर्ण भारतवर्ष को भक्ति साधना का मार्ग दिखाया। आपने अन्य संत महात्माओं की भॉति सत्य पर जोर दिया। आपने अपनी वाणियों में आत्मा को परमात्मा का अंश बताते हुए उससे मिलने का मार्ग प्रशस्त किया। जीव संसार में आकर मोह–माया के बंधनों में जकड़कर परमात्मा को भूल जाता है। आपने गुरू की शरण में जाकर जीव को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाया। आपकी वाणियों में हिन्दू–मुसलमान, जैन–वैष्णव, द्विज–शुद्र, सगुण–निर्गुण एवं भक्ति–योग के द्वन्द्व को समाप्त करते हुए मानवीय धर्म की स्थापना की है। मानवीय मूल्यों से सम्पन्न इस धर्म को हम 'रामस्नेही सम्प्रदाय' के नाम से जानते हैं। इस लेख में संत दरिया साहिब के व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं से जुड़े तथ्यों सतगुरू–महिमा, नाम–महिमा, वैराग्य, भ्रम, नाद आदि के बारे में सारगर्भित अध्ययन किया गया है।

शब्द–कुॅजी :

बैरागी, अध्यात्म, गगन–मण्डल, नाम–भक्ति, सत्पुरूष।

परिचय–

दरिया साहिब का जीवन एवं साहित्य–

दरिया साहिब के जीवन के सन्दर्भ में इनके जन्म से सौ वर्ष पहले ही संत दादूदयाल[1] ने भविष्य वाणी की थी। यह बालक इस संसार में ढेर सारे जीवों का उद्धार करने के लिए आयेगा–

देह पड़तां दादू कहै, सौ बरसाने इस संत।
रैन नगर में परगट, तारै जीव अनंत।।

दरिया साहिब, राजस्थान के एक प्रमुख संत और भक्ति कवि थे, जिनका जन्म 1676 ईस्वी, जन्माष्टमी के दिन जोधपुर के जैतारण में हुआ था। आपके पिता का नाम मानसा और माता का नाम गीगाबाई था। आप जाति से पठान धुनिया मुसलमान थे। अपनी जाति के सन्दर्भ में अपनी वाणी में लिखते हैं–

जो दुनिया तो भी में राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मतिहानी, तुम तो हो सरताज हमारा।।

सात वर्ष की अवस्था में सिर से पिता का साया उठ जाने के कारण आप जैतारण से रैण आकर नाना कासिम के पास रहने लगे। कुछ समय बाद स्वरूपानन्द आपको काशी ले गये। वहॉ पर आपने फारसी और संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया और कुरान के साथ–साथ ज्योतिष, भगवत् गीता, उपनिषद् आदि का भी अध्ययन किया। आपके गुरू का नाम प्रेमदयाल था। गुरू की शरण में जाने से आपके सांसारिक जंजाल मिट गये–

सतगुरू दाता मुक्ति का दरिया प्रेमदयाल।
किरपा कर चरनों लिया, मेटा सकल जंजाल।।

आपने खेजड़ा[2] नामक स्थान पर साधना आरम्भ की। रामभक्ति का प्रचार करते हुए 1758 ईस्वी को रैण में ही आपका देहान्त हो गया, जहॉ आपका वर्तमान समय में लाखा सागर की पाल पर समाधि स्थल बना हुआ है। आपने गुरू को सर्वोपरि माना है। गुरू की भक्ति से ही उस परमधाम को प्राप्त किया जा सकता है। राम नाम के अक्षरों में आपने धार्मिक समन्वय प्रस्तुत किया है। 'रा' में आप राम को देखते हैं, तथा 'म' में मोहम्मद को देखते हैं। आपने स्त्री जाति का सम्मान करते हुए जगत–जननी बताया है।

दरिया साहिब का साहित्य सरलता और सत्य की ऊँचाइयों को छूने में समर्थ है। उनकी कविताओं में आत्म–जागरूकता और आत्म–साक्षात्कार के सिद्धांतों का सुंदर संगम है। उनके शब्दों में गहरे भावनात्मकता और आत्म–समर्पण का अद्वितीयता है जो उन्हें भक्ति कवियों की श्रेणी में अनुस्मृति दिलाती है।

संत दरिया साहिब की भक्ति साधना–

संत दरिया साहिब ने अपने दोहों एवं पदों में अध्यात्म के मार्ग में जो अनुभव प्राप्त किये, उनका संक्षिप्त अध्ययन इन बिन्दुओं में देख सकते हैं।

सतगुरू का अंग–

संत दरिया साहिब ने भक्ति के इस अंग में सतगुरू की महिमा का गुणगान किया है। उन्हें संसार सागर से पार लगाने वाले जहाज के रूप में संबोधित किया है। सतगुरू

ने अपनी शरण में लेकर मुझे अनाथ से सनाथ बना दिया। अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया सतगुरू भेंटिया, जा दिन जनम सनाथ।
श्रवनॉ सब्द सुनाय के, मस्तक दीना हाथ।।

सतगुरू की शरण में जाने के पश्चात् जीव सांसारिक खींचतान से बाहर निकलकर परमात्मा की भक्ति में लीन हो जाता है–

दरिया सतगुरू सब्द सौं, मिट गयी खेंचा तान।
भरम अंधेरा मिट गया, परसा पद निरबान।।

सतगुरू की शरण में जाने से पहले भव–सिन्धु में भटका हुआ था। मुझे उन्होंने भव–सिन्धु से तिरने का मार्ग प्रशस्त किया–

डूबत रहा भव सिंध में, लोभ मोह की धार।
दरिया गुरू तैरूं मिला, कर दिया पहले पार।।

सतगुरू के उपदेश से मेरी जन्म–जन्मान्तरों की मूर्छा टूट गयी। सतगुरू द्वारा बताये गये शब्द ने मुझे अलौकिक धाम पहुँचा दिया–

सोता था बहु जन्म का, सतगुरू दिया जगाय।
जन दरिया गुरू सब्द सौं, सब दुख गये बिलाय।।

सुमिरन का अंग–

दरिया साहिब की मान्यता[3] है कि सभी धर्मों का मूल राम–नाम का स्मरण करना है। इसके अभाव में जीव चौरासी लाख यानियों में भटकता रहता है। वह संसार से पार होने के लिए वक्त के पूर्ण सतगुरू के सानिध्य में जाकर उनके द्वारा बताये गये राम–नाम के उपदेश एवं युक्ति के माध्यम से संसार से पार हो सकता है। अपनी वाणी में लिखते हैं–

राम भजै गुर सब्द ले, तौ पलटै मन देह।
दरिया छाना क्यों रहै, भू पर बूठा मेंह।।

राम–नाम के स्मरण के द्वारा जीव संसार के भ्रमों, संशयों एवं मोहमाया के बन्धनों से पार निकलकर शिव–नेत्र अर्थात्, दिव्य दर्शन प्राप्त कर सकता है। इस बात को इन्होंने अपनी वाणी में स्थान देते हुए लिखा है–

दरिया सुमिरै राम को, करम भरम सब खोय।
पूरा गुरू सिर पर तपै, विघन न लागै कोय।।

दरिया साहिब ने राम–नाम के सुमिरन को ही सच्ची आशा बताया है। जो प्रभु के नाम का सुमिरन करता है, संसार में वही सच्चा विजेता है। अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया सुमिरै राम को, दूजी आस निवार।
एक आस लागा रहे, तो कधी न आवै हार।।

संत दरिया जी ने संपूर्ण संसार को राममय माना है। इनकी दृष्टि में हिन्दु–मुस्लिम सब राममय है जो राम का सुमिरन4 नहीं करता वह अंधकार में अपना जीवन–यापन कर रहा है। राम की महिमा का गुणगान करते अपनी वाणी में लिखते हैं–

सब जग अंधा राम बिन, सूझै न काज अकाज।
राव रंक अंधा सबै, अंधों ही का राज।।

बिरह का अंग–

दरिया साहिब ने राम स्नेही जीवों की स्थिति बयां करते हुए लिखते हैं कि वो प्रभु के वियोग में रात–दिन तड़पते रहते हैं। अपनी नींद, सुध–बुध सब खो दी है। इस बात को पुष्ट करते हुए लिखते हैं–

बिरह बियापी देह में, किया निरंतर वास।
तालाबेली जीवमें, सिसके सॉस उसॉस।।

परमात्मा के वियोग में जीव का शरीर सूख गया है, पीला पड़ गया है। हमेशा प्रभु की याद में बैचेन रहते हुए अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया बिरही साध का, तन पीला मन सूख।
रैन न आवे नींदड़ी, दिवस न लागे भूख।।

वियोग में जीवात्मा के शरीर का हाड–मॉस एवं लहू घट गया है। जीवात्मा मरणासन्न स्थिति में पहुँच गयी है। परमात्मा से पुकार कर रही है–

बिरहन का घर बिरह में, ता घट लोहु न मॉस।
अपने साहब कारने, सिसके सॉसों सॉस।।

सूर का अंग–

इस अंग में दरिया साहिब ने शूरवीर[5] की पहचान बताते हुए लिखते हैं कि जो संसार की मोह–माया, आशा–तृष्णा एवं मन को जीतकर परमात्मा की ओर उसे लगा देता है। अपनी वाणी में लिखते हैं–

पंडित ज्ञानी बहुत मिले, वेद ज्ञान परबीन।
दरिया ऐसा ना मिला, राम नाम लवलीन।।

सतगुरू का उपदेश शिष्य के हृदय में इस प्रकार बैठ गया है कि शिष्य प्रभु–नाम के वियोग में दिवानों की भॉति भटकता रहता है। इस बात को समझाते हुए दरिया साहिब ने सतगुरू के उपदेश को बाण के माध्यम से अपनी वाणी में स्थान दिया है–

दरिया बान गुरूदेव का, भेदहि भरम बिकार।
बाहर घाव दीखै नहीं, भीतर भया सिमार।।

संत दरिया साहिब ने सच्चा सूरमा उसे कहा है, जो शब्द की चोट को सहन कर लेता है और अपने सारे संशय मिटाकर ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाता है। अपनी वाणी में समझाते हैं–

दरिया साचा सूरमा, सहै सब्द की चोट।
लागत ही भाजै भरम, निकस जाय सब खोट।।

नाद परचे का अंग–

इस अंग में दरिया साहिब ने अनहद नाद को सुनने की बात कही है, जिसे विरले जन ही सुन पाते हैं। इस नाद

को सुनने के बाद मनुष्य का ख्याल संसार से निकलकर उस परमात्मा में जुड़ जाता है। अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया सुमिरै राम को, आठ पहर आराध।
रसना में रस उपजै, मिसरी के से स्वाद।।

नाद को सुनने के बाद जीव अपने अंतर्मन में उस अगम–अगोचर सत्ता के दर्शन कर लेता है। जिसका कोई रूप–रंग नहीं है। इस बात को अपनी वाणी में समझाते हुए लिखते हैं–

नाभि कॅवल के भीतरे, भॅवर करत गुॅजार।
रूप न रेख न बरन है, ऐसा अगम विचार।।

दरिया साहिब ने परमात्मा के निज–घर की छठा का वर्णन एक दोहे में इस प्रकार किया है–

नौबत बाजै गगन में, बिन बादल घन गाज।
महल बिराजैं परम गुरू, दरिया के महाराज।।

ब्रह्म परचे का अंग–

दरिया साहिब ने ब्रह्म को परिभाषित6 करते हुए लिखा है कि जब जीव संसार की मोह–माया से निकलकर गुरू द्वारा बताये गये उपदेश एवं युक्ति के माध्यम से राम–नाम का सुमिरन करता है तो उसे सत्पुरूष की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् बूॅद समुद्र से मिलकर समुद्र बन जाती है। अपनी वाणी में लिखते हैं–

मन बुध चित हंकार यह, रहैं अपनी हद माहिं।
आगे पूरन ब्रह्म है, सो इनकी गम नाहिं।।

जब जीव ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है तब वह सुख–दुःख, जन्म–मरण एवं कर्मबन्धन से छुटकारा प्राप्त कर लेता है। दरिया साहिब लिखते हैं–

पाप पुन्न सुख दुख नहीं, जहॅ कोई कर्म न काल।
जन दरिया जहॅ पड़त है, हीरों की टकसाल।।

दरिया साहिब अपना आध्यात्मिक परिचय *देते हुए अपनी* वाणी में लिखते हैं–

जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता है राम।
गिरह हमारा सुन्न में, अनहद में बिसराम।।

हंस उदास का अंग–

इस अंग में दरिया साहिब ने ऐसे जीवों की स्थिति7 का वर्णन किया है जिनकी कथनी एवं करनी में अंतर होता है। बाहर से उनका चरित्र उज्ज्वल दिखाई देता है किन्तु उनकी करनी विपरीत होती है। सच्चा हंस वही बन सकता हैं जिसका तन और मन एक हो। इसको समझाते हुए दरिया साहिब अपनी वाणी में लिखते हैं–

बाहर से उज्ज्ल दसा, भीतर मैला अंग।
ता सेती कौवा भला, तन मन एकहि रंग।।

जो व्यक्ति श्वॉस–श्वॉस में राम–नाम का सुमिरन करता है वह हॅस बनकर परमधाम मानसरोवर में अपना स्थान बना लेता है। एक जगह दरिया साहिब ने लिखा है–

मानसरोवर बासिया, छीलर रहै उदास।
जन दरिया भज राम को, जब लग पिंजर सॉस।।

सुपने का अंग–

दरिया साहिब ने संपूर्ण संसार को सपने की भॉति बताया है। सारा संसार मोह–माया के जाल में फॅसकर गहरी नींद में सोया हुआ है–

दरिया सोता सकल जग, जागत नाहीं कोय।
जागे में फिर जागना, जागा कहिए सोय।।

सतगुरू ने राम–नाम का उपदेश देकर मुझ पर अत्यधिक कृपा करदी, जिसके कारण मैं चेतन अवस्था में पहुॅच गया हूॅ–

दरिया सतगुरू कृपा कर, सब्द लगाया एक।
जागत ही चेतन भया, नेतर खुला अनेक।।

साध का अंग–

दरिया साहिब ने इस अंग में सच्ची साधना के लक्षणों की चर्चा की है। जब जीव संसार के बन्धनों को त्याग कर निश्चल भाव से परमात्मा की शरण में चला जाता है, उसे ही सच्ची साधना कहा है। अपने अनुभव बताते हुए अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेख।
निःकपटी निरसंक रहि, बाहर भीतर एक।।

सतगुरू ही साधना का मार्ग प्रशस्त करने वाला है। उसके द्वारा दिये गये राम–नाम रूपी प्याले को कोई बिरला जन ही ग्रहण कर सकता है। अपनी वाणी में लिखते हैं–

राजा बॉटै परगना, जो गढ़ को पति होय।
सतगुरू बॉटै राम रस, पीवै बिरला कोय।।

चिंतामनि का अंग–

इस अंग में राम–नाम में रमे हुए लोगों की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

चिंतामनि चौकस चढ़ी, सही संक के हाथ।
ना काहू के सॅग मिलै, ना काहू से बात।।

अपारख का अंग–

इस अंग में उन जीवों की स्थिति का वर्णन किया है, जो मनुष्य जन्म के लाभ को नहीं समझ पाते हैं और मनुष्य8 जामे को व्यर्थ में ही गॅवा देते हैं। अपनी वाणी में समझाते हुए दरिया साहिब लिखते हैं–

हीरा हलाहल क्रोड़ का, जा का कौड़ी मोल।
जन दरिया कीमत बिना, बरतै डॉवॉडोल।।

उपदेश का अंग–

इस अंग में दरिया साहिब ने जीवों को समझाते हुए अपने जीवन में जो अनुभव किया है, उसका वर्णन किया है।

जो परमात्मा के नाम पर व्यर्थ की बात करते हैं, उनके बारे में लिखते हैं–

जन दरिया उपदेश दे, जा के भीतर चाय।
नातर गैला जगत से, बक बक मरै बलाय।।

दरिया साहिब ने परमात्मा के नाम पर कर्मकाण्ड करने वाले एवं वस्तुस्थिति नहीं समझने वाले लोगों को समझाते हुए लिखते हैं–

दरिया गैला जगत को, क्या कीजै समझाय।
रोग नीसरै देह में, पत्थर पूजन जाय।।

देखा–देखी करने वाले जीवों को समझाते हुए दरिया साहिब अपनी वाणी में कहते हैं–

भेड़ गति संसार की, हारे गिने न हार।
देखा देखी परबत चढ़ै, देखा देखी खाड़।।

पारस का अंग–

दरिया साहिब ने इस अंग में पारस पत्थर के माध्यम से सच्चे पारस की पहचान बताते हुए अपनी वाणियों में समझाते हैं–

अंग अंग पलटै नहीं, तो है झूठा संग।
पारस जाकर लाइये, जाकै अंग में गात।।

भेष का अंग–

इस अंग में दरिया साहिब ने परमात्मा को प्राप्त करने के नाम पर आडम्बर एवं विभिन्न प्रकार के स्वांग रचने वालों पर करारा व्यंग्य किया है। ऐसे लोग बाहर से राम के नाम का सुमिरन करते हैं एवं मन में छल–कपट रखते हैं। ऐसे जीवों की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

दरिया कॉटी देख सब, भीतर घात न प्रेम।
कली लगावै कपट की, नाम धरावै हेम।।

दरिया बिल्ली गुरू किया, उज्ज्ल बगु को देख।
जैसे को तैसा मिला, ऐसा जक्त और भेष।।

बाह्य आडम्बर करने वालों पर दरिया साहिब लिखते हैं–

कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय।
जन दरिया निज नाम बिन, पार न पहुँचै कोय।।

मिश्रित साखी–

दरिया साहिब की वाणियों के संकलन[9] में कुछ मिश्रित भाव भी देखने को मिलते हैं। जिनमें विभिन्न प्रकार के भाव देखने को मिलते हैं–

आत्मदर्शन–

जब जीव को परम् तत्त्व के दर्शन हो जाते हैं, उस वक्त का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

दरिया सब जग ऑधरा, सूझै सो बेकाम।
भीतर का नेतर खुला, तबहीं दरसै राम।।

सत्संग की महिमा–

संत दरिया साहिब ने इस नश्वर संसार में जीव को पार लगाने का एकमात्र साधन राम–नाम का सुमिरन एवं सत्संग को बताया है। अपनी वाणी में समझाते हैं–

दरिया सब जग ऑधरा, सूझै नहीं लगार।
औषध है सत्संग का, सतगुरू बोवनहार।।

दिव्यदर्शन–

दरिया साहिब ने अपनी वाणी में सत्पुरूष के दिव्यदर्शन एवं उसके दरबार का चित्रण करते हुए लिखा है–

दरिया सूरज ऊगिया, सब भरम गया बिलाय।
ऊर में गंगा परगटी, सरवर काहे जाय।।

जड़ मनुष्य–

दरिया साहिब ने ऐसे जीवों को जड़ कहा है, जो परमात्मा की शरण में आने के पश्चात् भी उसकी संगति से विमुख हो जाते हैं–

पाय बिसारै राम को, बैठा सब ही खोय।
दरिया पड़ै अकास चढ़, राखनहार न कोय।।

राममय संसार–

दरिया साहिब ने संपूर्ण संसार को राममय बताते हुए अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया तीनों लोक में, ढूंढ़ा सबही धाम।
तीर्थ बर्त विधि करत बहु, बिना राम किन काम।।

सच्चे साधक की पहचान–

दरिया साहिब ने अपनी वाणी में सच्चे साधक की पहचान बतायी है। वह उसे ही सच्चा साधक मानते हैं जो मन, कम वचन से प्रभु का ध्यान करते हैं–

रहनी करनी साध की, एक राम का ध्यान।
बाहर मिलता सो मिलै, भीतर आतम ज्ञान।।

संगत की महिमा–

हमें परमात्मा के नाम की बंदगी करने वाले जीवों की संगत करने की सलाह देते हुए अपनी वाणी में लिखते हैं–

दरिया संगत साध की, कल विष नासै धोय।
कपटी की संगत किये, आपहु कपटी होय।।

निर्गुण–सगुण में सामंजस्य–

जन दरिया साहिब अपनी वाणियों में परमात्मा के सगुण–निर्गुण रूप पर विवाद करने वाले लोगों को जवाब देते हुए लिखते हैं–

दरिया निरगुन राम हैं, सरगुन सतगुरू देव।
यह सुमिरावै राम को, वो है अलष अभेव।।

नारी की महिमा–

दरिया साहिब ने स्त्री की महिमा का बखान करते हुए उसे जगत्–जननी रूप में स्वीकार करते हुए अपनी वाणी में लिखते हैं–

नारी जननी जगत की, पाल पोस दे पोष।

मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष।।

राम–रहीम की एकता–

संत दरिया साहिब ने अपनी वाणिया[10] में हिन्दु–मुस्लिम एकता पर बल दिया। आप 'र' में राम एवं 'म' में मोहम्मद को स्वीकार करते हैं। अपनी वाणी में लिखते हैं–

ररां तौ रब आप हैं, ममा मोहम्मद जान।
दोय हरफ में माइना, सबही बेद पुरान।।

निष्कर्ष–

उक्त विवेचन के माध्यम से हम कह सकते हैं कि संत दरिया साहिब ने अपनी रचनाओं में अपने जीवन में प्राप्त अनुभवों के माध्यम से जीवों को संसार–सिन्धु से पार लगाने वाले साधन के रूप में राम–नाम को स्वीकार किया है। इसके माध्यम से जीव जनम–मरण के बन्धनों से छुटकारा प्राप्त कर सकता है। आपकी वाणियों के विभिन्न अंगों (सतगुरू, समिरन, विरह, सूर, नाद परचै, ब्रह्म, हॅस, सुपने, साध, चिन्तामनि, अपारख, उपदेश, पारस, भेष) के माध्यम से जीव को अपनी रहनी–करनी का मार्ग प्रशस्त किया है। दरिया साहिब की वाणियॉ आज भी सम्पूर्ण मानव जाति के लिए भक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। संतों का मार्ग किसी जाति, समुदाय, धर्म एवं समाज विशेष के लिए नहीं होता है, अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिए होता है। आज भी इनकी वाणियॉ प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ सूची

- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–11, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–18, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–21, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–22, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन रू बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–27, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–29, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–31, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–32, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–34, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922
- दरिया साहिब वाणी और जीवन चरित्र। पृ.–36, रचनाकार–संत दरिया साहिब मारवाड़ वाले। प्रकाशन : बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद संस्करण : 1922